

रॉबर्ट वानॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 13

प्रामाणिकता तर्क, प्रमुख विषय-वस्तु

ड्यूटेरो -यशायाह तर्क और प्रतिक्रिया की समीक्षा

एक सप्ताह पहले हम यशायाह के दूसरे भाग, यशायाह 40 से 66 की प्रामाणिकता और लेखकत्व के प्रश्न पर चर्चा कर रहे थे। एक बहुत ही मानक आलोचनात्मक दृष्टिकोण यह है कि वे अध्याय स्वयं यशायाह से नहीं, बल्कि अंतिम निर्वासन काल के एक लेखक से आए हैं, और हम उस दृष्टिकोण को प्रमाणित करने के लिए दिए गए कुछ प्रकार के तर्कों को देख रहे थे। एक मिनट के लिए बैकअप के लिए, समीक्षा के माध्यम से, तर्कों को मूल रूप से तीन तक कम किया जा सकता है।

पहला यह था कि पुस्तक के दूसरे खंड में अवधारणाएँ और विचार, पुस्तक के पहले खंड के निर्विरोध भागों की अवधारणाओं और विचारों से भिन्न हैं। तर्क की दूसरी पंक्ति यह है कि दूसरे भाग में भाषा और शैली में अंतर है, और यह अलग-अलग लेखकत्व की ओर इशारा करता है। हमने तर्क की उन दोनों पंक्तियों को काफी बारीकी से देखा, और मैंने आपको उन पर कुछ प्रतिक्रियाएँ दीं।

हम तब अंतिम तर्क पर चर्चा कर रहे थे, जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का तर्क है। पुस्तक के दूसरे भाग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पहले भाग से स्पष्ट रूप से भिन्न है। यह मान लिया गया है कि निर्वासन हो चुका है। कुसू का उल्लेख उस नाम से किया गया है जो इस्राएल को निर्वासन से छुड़ाने वाला था। संदेश, चेतावनी और आने वाले फैसले के बजाय, निर्वासन से प्रमुख रिहाई के मद्देनजर सुलह और आशा के संदेश में बदल गया है। वास्तव में, मुझे ऐसा लगता है कि वह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का मुद्दा ही महत्वपूर्ण तर्क है। यह इस मुद्दे पर निर्भर करता है कि क्या आप इसके संबंध में वास्तविक भविष्यवाणी और दैवीय रहस्योद्घाटन की संभावना को स्वीकार करने के इच्छुक हैं या नहीं। यदि आप इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं, तो आप आलोचकों के इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए लगभग मजबूर हो जाएंगे कि कोई व्यक्ति संभवतः वह सामग्री नहीं लिख सकता जब तक कि वह बेबीलोन के निर्वासन के समय में नहीं रह रहा हो। इसीलिए आलोचकों का तर्क है कि जिस व्यक्ति ने यह लिखा है वह उस समय में रहा होगा जिसका वह वर्णन करता है। कई लोगों के लिए

किसी भी मानवीय तरीके से यह समझाना असंभव है कि यशायाह ने ये बातें कैसे लिखी होंगी।

यशायाह के समकालीन दर्शकों के लिए यशायाह 40-66 की प्रासंगिकता [निर्णय/निर्वासन
→आराम]

लेकिन फिर उस तर्क के संबंध में, यशायाह के समकालीन दर्शकों के लिए यशायाह 40 से 66 की प्रासंगिकता के बारे में अक्सर सवाल उठता है, और घंटे के अंत में हम वहीं थे। महत्वपूर्ण तर्क यह है कि भविष्यवक्ता हमेशा अपने समकालीनों के लिए प्रासंगिकता के साथ बोलते हैं। यशायाह 40-66 का यशायाह के समय में किसी के लिए कोई प्रासंगिकता नहीं है। मैं इस बात को लेकर आश्चर्य नहीं हूँ कि पुस्तक के दूसरे भाग की सामग्री के संबंध में यह इतना मजबूत बिंदु है।

ठीक समय के अंत में मैं यह उल्लेख कर रहा था कि आहाज और हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान, जिसके दौरान यशायाह का अधिकांश मंत्रालय हुआ, यशायाह 1:1 में, यह कहा गया है कि यशायाह ने उज्जियाह, जोथम, आहाज, हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान भविष्यवाणी की थी . इसमें मनश्शे का उल्लेख नहीं है। लेकिन अगर आपको याद हो जब हमने पुस्तक के परिचय पर चर्चा की थी, तो पुस्तक सन्हेरीब के बारे में रिपोर्ट करती है और हम सन्हेरीब की मृत्यु की तारीख जानते हैं। तो यह स्पष्ट है कि यशायाह ने मनश्शे के समय में भविष्यवाणी की थी, भले ही पुस्तक की प्रस्तावना में उसका उल्लेख नहीं किया गया है। कई लोगों का मानना है कि यशायाह ने मनश्शे के समय में जो किया वह एक व्यापक, सार्वजनिक मंत्रालय से उन लोगों के लिए एक निजी मंत्रालय में बदल गया जो देश में ईश्वरीय थे, जिन्होंने उसके संदेश का जवाब दिया और इज़राइल की पाप की स्थिति के बारे में चिंतित थे। जब आप हिजकिय्याह के बाद अगले राजा, अर्थात् मनश्शे के शासन में पहुँचते हैं, तो राष्ट्र भयानक धर्मत्याग में गिर गया। 2 राजा 21 दक्षिणी साम्राज्य के सबसे दुष्ट राजा मनश्शे के अधीन समय की बुराई का वर्णन करता है।

यहूदी परंपरा के अनुसार, यशायाह मनश्शे के समय में शहीद हुआ था। परंपरा यह है कि मनश्शे के लोग उसका पीछा कर रहे थे। इसलिए वह एक पेड़ में छिप गया, और पेड़ दो टुकड़ों में कट गया - मुझे लगता है कि मैंने पहले उल्लेख किया था कि, यशायाह को दो टुकड़ों में काट दिया

गया था। कुछ लोग इब्रानियों 11:37 में इसे एक भ्रम देखते हैं, जहां यह विश्वास के नायकों के बारे में कहा गया है कि कुछ को आरी से काट दिया गया था। अच्छे राजा हिजकिय्याह की मृत्यु के बाद, यशायाह को यह स्पष्ट हो गया होगा कि राष्ट्र पश्चाताप नहीं करेगा, निर्वासन अपरिहार्य था। यह परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए भी स्पष्ट रहा होगा। उन परिस्थितियों में उन्होंने यशायाह का संदेश सुना। यदि यशायाह उन लोगों के लिए मंत्री बन जाता, तो फटकार और निंदा का संदेश लाने की कोई आवश्यकता नहीं होती। वह पहले ही किया जा चुका था। यह स्पष्ट था कि निर्वासन आ रहा था। उस समय सबसे बड़ी आवश्यकता परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए सांत्वना और आशा के शब्द लाने की थी जो भयानक धर्मत्याग और उत्पीड़न के समय में यशायाह का अनुसरण कर रहे थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन लोगों ने निर्वासन के फैसले को अपरिहार्य माना। हो सकता है कि वे निराश हो गए हों और आश्चर्यचकित हो गए हों कि क्या इससे देश का अंत हो जाएगा। उन्हें निर्वासित किया जाएगा, क्या वह अंत होगा? इसलिए मुझे लगता है कि यशायाह के समय के धर्मनिष्ठ लोगों की मानसिकता उन लोगों की मानसिकता के समान हो सकती थी जिन्होंने वास्तव में निर्वासन की उन स्थितियों का अनुभव किया था। लोग पहले ही निर्वासन में चले गये थे। वे भी आश्चर्यचकित हो सकते हैं-क्या राष्ट्र का कोई भविष्य है? उन्हें निराशा की ओर प्रलोभित किया जा सकता है। तो यशायाह का संदेश, कि ईश्वर अपने लोगों को बचाएगा, ईश्वर के सच्चे लोगों को सच्चा आराम देगा, और यह उन लोगों के लिए भी सच होगा जिन्होंने वास्तव में निर्वासन का अनुभव किया था। यह जानकर तसल्ली होगी कि निर्वासन अस्थायी होगा; यह हमेशा के लिए नहीं होगा। यह यशायाह के समय में परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए भी सांत्वनादायक होगा, जहां उन्होंने धर्मत्याग को बढ़ते देखा क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि निर्वासन अपरिहार्य था।

यशायाह 36-39 हिजकिय्याह और मेरोडाक बेबीलोन का

बलदान एक अन्य टिप्पणी: यह दिलचस्प है कि ऐतिहासिक सामग्री का विभाजन खंड, अध्याय 36 से 39, जो यशायाह 1 से 35 - पहले की भविष्यवाणियों - और फिर 40 से 66 के बाद के खंड के बीच विभाजित होता है, भविष्यवाणी के साथ समाप्त होता है कि यहूदा के लोग करेंगे बाबुल

में निर्वासन में जाओ. यदि आप अध्याय 39 के अंत को देखें, तो यह एक छोटा अध्याय है, आपके पास मरोदक-बालादान की यात्रा की कहानी है जो बेबीलोन के राजा बलदान का पुत्र था, और वह हिजकिय्याह के समय में यरूशलेम आया था। हिजकिय्याह ने उसका स्वागत किया, और उसे यहूदा के सभी खजाने दिखाए। आपने अध्याय 39, श्लोक 3 में पढ़ा, " तब यशायाह भविष्यद्वक्ता राजा हिजकिय्याह के पास गया और पूछा, 'उन लोगों ने क्या कहा, और वे कहाँ से आए थे?' 'दूर देश से,' हिजकिय्याह ने उत्तर दिया। 'वे बेबीलोन से मेरे पास आए।' नबी ने पूछा, 'उन्होंने तुम्हारे महल में क्या देखा?' हिजकिय्याह ने कहा, 'उन्होंने मेरे महल में सब कुछ देखा।' 'मेरे खज़ानों में ऐसा कुछ नहीं जो मैंने उन्हें न दिखाया हो।' तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, सर्वशक्तिमान यहोवा का वचन सुनो: वह समय अवश्य आएगा जब तेरे महल में जो कुछ है, और जो कुछ तेरे पुरखाओं ने आज के दिन तक रखा है, वह सब बेबीलोन को ले जाया जाएगा। कुछ भी न बचेगा, यहोवा का यही वचन है। और तेरे वंशजों में से, अर्थात् तेरे मांस और रक्त में से जो तुझ से उत्पन्न होंगे, ले लिए जाएंगे, और वे बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक बन जाएंगे।' हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, 'यहोवा का जो वचन तू ने कहा है वह अच्छा है।' क्योंकि उसने सोचा, 'मेरे जीवनकाल में शांति और सुरक्षा होगी।' दिलचस्प बात यह है कि हिजकिय्याह के समय में, बेबीलोन एक बड़ी शक्ति नहीं थी। बेबीलोन असीरियन नियंत्रण में एक शहर था; असीरिया प्रमुख शक्ति थी।

अब असीरियन प्रभुत्व से खुद को मुक्त करने की कोशिश के बारे में बेबीलोन के अपने विचार हो सकते हैं, लेकिन उस समय इसके लिए कोई खास आधार नहीं था। लेकिन यहां एक विशिष्ट भविष्यवाणी है जो भगवान ने यशायाह को लोगों तक पहुंचाने के लिए दी थी: कि बंधुआई आने वाली है; और यह केवल असीरिया तक ही सीमित नहीं रहेगा जो एक प्रमुख शक्ति थी, यह बेबीलोन शहर तक भी होने वाला है।

अब, अध्याय 36 से 39 में सामग्री की व्यवस्था में, जो हिजकिय्याह के जीवन की घटनाएं हैं, बेबीलोन की कैद में जाने के बारे में भविष्यवाणी को खंड के अंत में रखा गया है। दूसरे शब्दों में, इसे अध्याय 40 से ठीक पहले और उसके बाद रखा गया है, जो पहले से ही बेबीलोन में होने और निर्वासन से मुक्ति के बारे में बात करता है। इसे उस ऐतिहासिक खंड (अध्याय 36 से 39) के अंत में

रखा गया है, भले ही कालानुक्रमिक रूप से यह संभवतः यशायाह 36-39 में कुछ अन्य घटनाओं से पहले था।

हिजकिय्याह के शासनकाल के कालक्रम के साथ बहुत जटिल समस्याएं हैं, लेकिन लगभग सभी लोग इस बात से सहमत हैं कि मेरोडाक-बालादान की यात्रा उनके जीवन के अंत में नहीं हुई थी; यह पहले हुआ था. मैं इसके कारणों में नहीं जाऊंगा, लेकिन यह मान लेना उचित लगता है कि इसे तार्किक कारण से अंत में रखा गया था, कालानुक्रमिक कारण से नहीं। इसे तार्किक कारण से अंत में रखा गया है, ताकि आगे आने वाले सांत्वना के इन शब्दों का परिचय दिया जा सके। यशायाह ने लोगों को आश्वासन दिया कि भले ही निर्वासन आने वाला है, लेकिन यह अंत नहीं है। परमेश्वर अब भी अपने लोगों के साथ रहेगा; उनके आगे अभी भी भविष्य है। तो मुझे लगता है कि उस बिंदु पर आप वही बात पर वापस आ जाएंगे जो हमने शुरुआत में कहा था। यदि यशायाह भविष्यवाणी कर सकता है कि निर्वासन आ रहा है, तो कोई कारण नहीं है कि वह यह भविष्यवाणी न कर सके कि उसके बाद आने वाले निर्वासन से मुक्ति मिलने वाली है।

मीका की बेबीलोनियन निर्वासन की भविष्यवाणी [असीरिया नहीं] न केवल यशायाह बेबीलोनियन निर्वासन के आने के बारे में बात करता है, असीरियन नहीं, बल्कि मीका भी करता है। मीका यशायाह का समकालीन था। यदि आप मीका 4:10 को देखें; मीका कहता है, “ हे सियोन की बेटी, प्रसव पीड़ा से पीड़ित स्त्री की नाई पीड़ा में तड़पो, क्योंकि अब तुम्हें खुले मैदान में डेरा डालने के लिए शहर छोड़ना होगा। तुम बेबीलोन को जाओगे; वहां तुम्हें बचाया जाएगा. वहाँ यहोवा तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाएगा। ” तो मीका भी बेबीलोन जाने की बात कह रहे हैं.

तो मुझे ऐसा लगता है कि यह कहने का कारण है कि इस सामग्री का यशायाह के समकालीनों के लिए महत्व है, भले ही इसमें उनके जीवनकाल के 100 या अधिक वर्षों के बाद की घटनाएँ शामिल हैं। मैं सिर्फ यह उल्लेख कर सकता हूँ कि मनश्शे ने 686-642 ईसा पूर्व शासन किया था, हम ठीक से नहीं जानते कि यशायाह का मंत्रालय कितनी दूर तक गया था, हालांकि हम सन्हेरीब की मृत्यु तक वापस जाते हैं जो कि 681 ईसा पूर्व थी। सन्हेरीब की मृत्यु 681 थी, जो

यशायाह में दर्ज है अध्याय 37. तो, निश्चित रूप से यह 681 से आगे चला गया। साइरस की तारीखें 539 से 530 ईसा पूर्व हैं यह भविष्य में लगभग 150 वर्ष है। अब, मुझे ऐसा लगता है कि आलोचकों के ये बुनियादी तर्क लेखकत्व की बहुलता को साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। इन सभी पर अच्छे रिस्पॉन्स आ रहे हैं।

प्रामाणिकता के लिए तर्क तब आप प्रश्न के दूसरी ओर जा सकते हैं। प्रामाणिकता के विरुद्ध आपके पास ये तर्क हैं, लेकिन यशायाह और उसके लेखकत्व, या इस सामग्री की प्रामाणिकता को बनाए रखने के कुछ मजबूत कारण भी हैं - मैं दो का उल्लेख करना चाहता हूं।

1. इस बात का कोई पांडुलिपि प्रमाण नहीं है कि पुस्तक अपने वर्तमान, एकीकृत रूप के अलावा किसी अन्य रूप में अस्तित्व में थी

पहला यह है: इस बात का कोई पांडुलिपि प्रमाण नहीं है कि यह पुस्तक अपने वर्तमान, एकीकृत स्वरूप के अलावा किसी अन्य रूप में अस्तित्व में थी। दूसरे शब्दों में, स्व-निहित इकाई के रूप में दूसरे यशायाह की कोई पांडुलिपि नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि हमारे पास यशायाह की संपूर्ण पुस्तक की एक मृत सागर स्कॉल पांडुलिपि है जिसे यशायाह स्कॉल कहा जाता है। इसमें ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी की पूरी किताब है, जो जेरूसलम के डेड सी स्कॉल संग्रहालय में प्रमुख प्रदर्शनी है। यदि आप सेप्टुआजेंट को देखें, तो यह वैसा ही है। सेप्टुआजेंट पांडुलिपियाँ यशायाह की पुस्तक को विभाजित नहीं करती हैं - यह यशायाह की पूरी पुस्तक है। यह 250-200 ईसा पूर्व तक जाता है इसलिए जहां तक पांडुलिपि साक्ष्य की बात है, यह निश्चित रूप से पुस्तक की एकता का समर्थन करता है।

2. नए नियम का गवाह स्पष्ट रूप से इसाईहानिक लेखकत्व का है

दूसरा कारक, और यदि आपके पास पवित्रशास्त्र के प्रति उच्च दृष्टिकोण है तो यह निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। नए नियम की गवाही स्पष्ट रूप से इसैहानिक लेखकत्व की है।

अलेक्जेंडर ने अपनी टिप्पणी में लिखा है कि नए नियम में यशायाह का नाम 21 बार उद्धृत किया

गया है, जो काफी अधिक है। वे उद्धरण पुस्तक के दोनों खंडों से आते हैं; अर्थात्, 1 से 39 तक और 40 से 66 तक। मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ: यूहन्ना 12:38-40 कहता है, "यह यशायाह भविष्यवक्ता के वचन को पूरा करने के लिए था: 'हे प्रभु, जिसने हमारे संदेश पर विश्वास किया है, यहोवा का हाथ किस पर प्रगट हुआ है?' इस कारण से वे विश्वास नहीं कर सके क्योंकि जैसा कि यशायाह अन्यत्र कहता है: 'उसने उनकी आंखें अंधी और उनके हृदयों को मुर्दा कर दिया है।' अब आपके पास दो उद्धरण हैं। पहला यशायाह 53:1 से है "किस ने हमारे सन्देश की प्रतीति की, प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ है।" दूसरा यशायाह 6:9 से है। ये दोनों यशायाह से उद्धृत हैं, और एक पुस्तक के पहले भाग से है; दूसरा किताब के दूसरे भाग से है। जॉन 12:41 आगे कहता है, "यशायाह ने यह इसलिए कहा क्योंकि उसने यीशु की महिमा देखी और उसके बारे में बात की।" तो, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जॉन समझता है कि पुस्तक का पहला भाग और दूसरा भाग स्वयं यशायाह से आया है।

यदि आप ल्यूक 4:17 को देखें तो यह कहता है: "भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक उसे [यीशु] को सौंपी गई थी; उसे खोलने पर उसे वह स्थान मिला जहाँ लिखा था, 'प्रभु की आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है।' यह यशायाह 61 का एक उद्धरण है, जो पुस्तक का दूसरा भाग है ; यह भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक है।

प्रेरितों के काम 8:30 वह स्थान है जहाँ इथियोपिया का खोजी यशायाह से पढ़ रहा है और आप पढ़ते हैं: "फिलिप रथ के पास दौड़ा, और उस आदमी को यशायाह भविष्यवक्ता को पढ़ते हुए सुना। 'क्या आप समझते हैं कि आप क्या पढ़ रहे हैं?' फिलिप ने पूछा। 'मैं कैसे कर सकता हूँ?' उन्होंने कहा, 'जब तक कोई मुझे यह नहीं समझाता।' इसलिए उसने फिलिप्पुस को अपने पास आने और बैठने के लिए आमंत्रित किया। नपुंसक धर्मग्रंथ के इस अंश को पढ़ रहा था: 'उसे वध के लिए भेड़ की तरह ले जाया गया' - यह यशायाह 53 है। वह यशायाह भविष्यवक्ता से पढ़ रहा है, पुस्तक का दूसरा भाग। इसलिए मुझे लगता है कि न्यू टेस्टामेंट गवाह में पांडुलिपि साक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट है कि हमें पुस्तक की संपूर्णता को यशायाह की ओर से समझना है।

यशायाह का गुणन

वही पद्धति जो यशायाह को पहले और दूसरे के बीच विभाजित करने के लिए उपयोग की जाती है, उसे तीसरे यशायाह के उत्पादन के लिए आगे बढ़ाया जाता है। इनमें से कुछ आलोचनात्मक विद्वानों के पास चौथा और पाँचवाँ यशायाह है, और उनमें से कुछ के पास एक दर्जन तक यशायाह हैं। यह, फिर से, भाषा और शैली को अलग करने की उस तरह की पद्धति की भ्रांति की ओर इशारा करता है। कहीं भी अलग-अलग शब्दावली या शैली होती है तो वे कहते हैं कि यह अलग-अलग लेखक द्वारा किया गया है। आप लगभग कह सकते हैं कि प्रत्येक अध्याय किसी और के द्वारा लिखा गया है। कोई शायद इतनी दूर तक नहीं जा सकेगा, लेकिन आप दूसरे यशायाह से बहुत आगे तक जा सकते हैं, और बहुत से विद्वान ऐसा कर चुके हैं। लेकिन प्रमुख चीज़ ड्यूटेरो - यशायाह है, लेकिन ऐसे कई लोग हैं जो ट्रिटो - यशायाह को मानते हैं। तीन यशायाह के अनुयायियों की एक अच्छी संख्या है, और 12 और 13 तक जाने वाले लोगों के उदाहरण हैं।

योशियाह का सुधार

ठीक है, मेरा अनुमान है कि आप इसका समर्थन कर सकते हैं, हालाँकि आपके पास हमेशा वह यिर्मयाह मार्ग होता है। जहाँ मैं उस मार्ग के बारे में सोच रहा हूँ, जहाँ कुम्हार और मिट्टी के लिए चित्रण का उपयोग किया गया है। यिर्मयाह 18:8 कहता है, "यदि वह जाति जिसके विरुद्ध मैं ने न्याय सुनाया है, अपनी बुराई से फिर जाए, तो मैं उस बुराई के लिये जो मैं ने उन से करने की सोची थी मन फिराऊंगा।" तो आपके पास अध्याय 39 के अंत में निर्वासन का वह कथन स्पष्ट रूप से है। लेकिन यह आपको उस संदर्भ में यिर्मयाह 18:8 के कार्य करने की संभावना के बारे में आश्चर्यचकित कर सकता है जब आप मनश्शे से जाते हैं तो आपके पास दुष्ट आमोन होता है। आमोन के बाद आपके पास योशियाह है। धर्मात्मा योशियाह के समय में कानून की किताब मिली, और वह महान सुधार हुआ। तो फिर आप आश्चर्यचकित हो सकते हैं: क्या योशियाह के अधीन यह सुधार इतना पर्याप्त होगा कि निर्वासन उलट दिया जाएगा; क्या अब उन्हें न्याय के बजाय आशीर्वाद का अनुभव

होगा? लेकिन किंग्स में योशियाह के समय के कई स्पष्ट कथन हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि बहुत कम, बहुत देर हो चुकी थी।

2 किंग्स में अध्याय 23 को देखें, और आपके पास अध्याय के प्रारंभिक भाग में योशियाह के सुधार का एक रिकॉर्ड है। फिर पद 21 पर जाएँ: “राजा ने लोगों को आज्ञा दी, 'फसह मनाओ,' और इस्राएल का न्याय करनेवाले न्यायियों के दिनों से, और न इस्राएल के राजाओं के दिनों में ऐसा फसह मनाया गया।।” पद 24 “ इसके अलावा, योशियाह ने ओझाओं और भूत-प्रेतों, गृह देवताओं, मूर्तियों, और यहूदा और यरूशलेम में देखी जाने वाली अन्य सभी घृणित वस्तुओं से छुटकारा पा लिया। यह उस ने उस पुस्तक में लिखी व्यवस्था की शर्तों को पूरा करने के लिये किया जिसे हिल्कियाह याजक ने यहोवा के मन्दिर में पाया था। न तो योशियाह से पहले और न ही उसके बाद उसके जैसा कोई राजा हुआ जो मूसा की सारी व्यवस्था के अनुसार अपने पूरे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति से यहोवा की ओर फिरा हो। ”

लेकिन 2 राजा 23:26 को देखें। आप देखिये कि योशियाह के समय में कैसे महान सुधार हुआ। इस वादा किए गए निर्वासन पर इसका क्या प्रभाव पड़ने वाला है? पद 26: “ तौभी यहोवा अपने भड़के हुए क्रोध की आग से न शान्त हुआ, जो मनश्शे ने उसे क्रोध दिलाने के लिये जो कुछ किया था, उसके कारण यहूदा पर भड़क उठा। ”तो, मुझे ऐसा लगता है कि उस मुद्दे पर भी विचार किया जाना चाहिए और मनश्शे के समय में जो हुआ उसके कारण यह बहुत स्पष्ट हो गया है। निर्णय को हटाया या रद्द नहीं किया जाएगा।

बी. यशायाह 40-66 की सिम्फोनिक संरचना, जैसे कि थीम आगे और पीछे चलती है आइए रूपरेखा में बी पर चलते हैं। यशायाह 40-66 के तहत, जो है: "सिम्फोनिक संरचना।" जिस विचार पर मैं यहां आपके साथ चर्चा करना चाहता हूं, वह मैंने पहली बार कई साल पहले कुछ व्याख्यानों में डॉ. मैकरे द्वारा प्रस्तावित सुना था। जो बात मुझे मददगार लगती है वह यह है कि यशायाह 40-66 को औपचारिक संबोधन या ऐतिहासिक ग्रंथ की तरह व्यवस्थित नहीं किया गया है। इसका विश्लेषण करने के लिए एक बहुत ही जटिल और कठिन साहित्यिक शैली है, और मैकरे ने जो

प्रस्ताव दिया है वह यह है कि साहित्यिक शैली की तुलना सिम्फोनिक संगीत रचना से की जानी चाहिए। तो जब आप यशायाह 40 को पढ़ते हैं तो आपको पता चलता है कि सामग्री तार्किक चर्चा के रूप में नहीं है; बल्कि सामग्री की संरचना एक विषय से दूसरे विषय से दूसरे विषय की ओर बढ़ती है, और कभी-कभी ये गतियाँ बहुत अचानक होती हैं। कभी-कभी उस परिच्छेद के साथ कोई सीधा तार्किक संबंध नहीं होता है जो तुरंत दूसरे परिच्छेद का अनुसरण करता है। आप बस विभिन्न प्रकार के विषयों के माध्यम से आगे और पीछे जाते हैं, और मैकरे को लगता है कि संरचना निर्वासन में दुख और पीड़ा में लोगों की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के लिए एक अपील है, और विभिन्न विषयों को एक विनिमेय तरीके से छुआ गया है। आपके पास कुछ समय के लिए एक थीम पेश की जाएगी और फिर एक नई थीम पेश की जाएगी, और फिर एक तीसरी थीम पेश की जाएगी; और फिर आप पहले वाले पर लौटते हैं, और शायद चौथा मिल जाता है, और आप तीसरे पर वापस आ जाते हैं, और ऐसा लगता है जैसे यह आगे बढ़ रहा है। डॉ. मैकरे के साथ मेरे पाठ्यक्रम में, जो सिर्फ यशायाह पर था, वास्तव में, यशायाह के इस खंड पर, उन्होंने हमें एक अभ्यास कराया जो मुझे बहुत उपयोगी लगा; इस कोर्स में मेरे पास इसे करने का समय नहीं है। अर्थात्, यशायाह से गुजरें और विषयों को चार्ट करें। उन्हें रंग कोड दें, और फिर यदि आपके पास आधा दर्जन थीम और आधा दर्जन रंग हैं और जैसे-जैसे आप आगे बढ़ते हैं, आप रंग कोड करते हैं, तो आप थीम की पहचान कर सकते हैं, और आप पृष्ठ की एक नज़र में देख सकते हैं कि संरचना कैसे आगे बढ़ती है एक विषय से दूसरे विषय तक।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 28, 29 को देखें। व्हायब्रे, 1983। व्हायब्रे के अंतर्गत दूसरे दो पैराग्राफ, जो उनकी पुस्तक के पृष्ठ 40 और 41 से आते हैं, इस प्रश्न पर: क्या विषयों की कोई सुसंगत व्यवस्था है जिसे समझा जा सकता है? वह दूसरे यशायाह के बारे में बात कर रहा है; यह उनकी मार्गदर्शक पुस्तक का शीर्षक है। "शायद यह कहना पर्याप्त है कि किसी एक को खोजने के प्रयास में विद्वानों के बीच सहमति की कमी, और व्यापक समर्थन हासिल करने के इन प्रयासों में से किसी में भी विफलता, एक नकारात्मक उत्तर का सुझाव देती है।"

व्यवस्था के तार्किक सिद्धांत को खोजने की असंभवता को स्वीकार करते हुए एक यांत्रिक सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। उन्होंने तर्क दिया कि लेखों को कैच वर्ड के सिद्धांत पर संपादकीय रूप से व्यवस्थित किया गया है; अनुच्छेदों को किसी आंतरिक अनुरूपता या अर्थ की निरंतरता के कारण नहीं, बल्कि दोनों में कुछ विशुद्ध मौखिक लिंक की आकस्मिक घटना के कारण एक दूसरे से जोड़ा गया है। 45:20-25 और 46:1-4 में "झुको" शब्द की घटना का एक उदाहरण मिलता है। भले ही इसमें कोई सूक्ष्म धार्मिक बिंदु खोजना संभव हो, यह एक संपादक द्वारा उठाया गया बिंदु है, क्योंकि दोनों अंश अपने आप में पूर्ण हैं। अन्य मामलों में कोई विषयगत संबंध नहीं है। कुछ मामलों में पुस्तक के हर जोड़े के बीच बुलविकल का यांत्रिक लिंक अक्सर बहुत मजबूर होता है और यह दृढ़ विश्वास रखने में विफल रहता है। लेकिन कुछ चल रहा है, लेकिन एक तार्किक, विषयगत संरचना खोजना उतना ही कठिन है। खंड, या पेरिकोप्स, जो स्पष्ट रूप से विषयगत रूप से जुड़े हुए हैं, उदाहरण के लिए, चार तथाकथित सेवक भजन (42:1-4, 49:1-6, 50:4-9, 53:1-12) पूरे क्षेत्र में बिखरे हुए हैं। किताब! व्हाईब्रे कहते हैं, "बिना किसी स्पष्ट कारण के, यह दिखाने के प्रयासों के बावजूद कि वे अपने संदर्भ से संबंधित हैं, एक आधुनिक पाठक के लिए यह स्पष्ट रूप से कहना जल्दबाजी होगी कि पुस्तक में कोई सुसंगत, तार्किक क्रम नहीं है। लेकिन स्थिति यह है कि किसी को खोजने का कोई भी प्रयास अब तक सफल नहीं हुआ है।

एक संगीत रचना की तरह कोई तार्किक व्यवस्था नहीं मैकरे के अनुसार , कोई तार्किक व्यवस्था नहीं है। यह अधिक मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक प्रकार का विषयों का अंतर्विभाजन है, ठीक वैसे ही जैसे आप एक संगीत रचना में करते हैं जो लोगों पर प्रभाव डालता है, या प्रभाव डालता है। आप एक संगीत रचना सुनते हैं; आप इसका तकनीकी रूप से विश्लेषण नहीं करते हैं; आपको संगीत के साथ ले जाया जा सकता है, और आप संगीत से प्रेरित हो सकते हैं। लेकिन जब तक आप एक प्रशिक्षित संगीतकार नहीं हैं, आप वास्तव में तकनीकी रूप से विश्लेषण करने की कोशिश नहीं करते कि वास्तव में क्या हो रहा है। आप चीजों को पहचानते हैं; आप किसी विषय की पुनरावृत्ति को पहचानते हैं —आप एक नोट पर जाते हैं और फिर पहले वाले पर वापस आते हैं।

MacRae इसी प्रकार की सादृश्यता का उपयोग करता है।

यशायाह 40-66 के प्रमुख विषय

अब, जब हमने MacRae के साथ इसका अध्ययन किया, तो हमने विभिन्न विषयों की पहचान करने का प्रयास किया। यह आश्चर्यजनक है कि कितनी सामग्री कुछ प्रमुख विषयों की श्रेणियों के अंतर्गत फिट होगी। आइए मैं आपको उनमें से कुछ देता हूँ।

1. आराम

पहला है आराम, और उसके अंतर्गत, सामान्य अर्थ में मुक्ति, और निर्वासन से मुक्ति का एक अधिक विशिष्ट अर्थ। लेकिन आराम के विषय के तहत, दुख में डूबे लोगों को आराम देने के लिए कहा जाता है क्योंकि मुक्ति आ गई है। कभी-कभी यह बहुत व्यापक, सामान्य अर्थ में मुक्ति जैसा प्रतीत होता है। अन्य समय में यह विशेष रूप से निर्वासन से मुक्ति प्रतीत होता है। लेकिन आपके पास ऐसे लोग हैं जो दुख में हैं, उन्हें बताया जा रहा है कि मुक्ति आ रही है। तो आपके पास आराम का विषय है।

2. ईश्वर की शक्ति

तब आपके पास ईश्वर की शक्ति का विषय है। ईश्वर की शक्ति के तहत मैंने उसके अस्तित्व, उसकी रचनात्मक शक्ति और इतिहास में उसकी संप्रभुता पर जोर दिया है। लेकिन मुझे लगता है कि इस विषय के साथ इसे भगवान के लोगों को आश्वस्त करने के लिए लाया गया है कि उनके वादे पूरे होंगे। दूसरे शब्दों में, यहां लोग पीड़ित हैं। उन्हें बताया गया है कि मुक्ति आ रही है। उन्हें सांत्वना देने के लिए कहा जाता है, और सवाल उठ सकता है: “यह कैसे हो सकता है? हमारी मुक्ति कैसे होगी?” खैर, ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वह अस्तित्व में है, नंबर एक; नंबर दो, वह पृथ्वी के छोर का निर्माता है और नंबर तीन, वह पूरे इतिहास को नियंत्रित करता है। सभी राष्ट्र, नेता, शासक उसकी शक्ति के अधीन हैं। तो मेरा मानना है कि ज़ोर यह दिखाने पर है कि ईश्वर सक्षम है। उसने ब्रह्मांड की रचना की, और उसने सभी मनुष्यों की रचना की। उसकी शक्ति बेबीलोन की मूर्तियों

और बुतपरस्त देवताओं की कमज़ोरी से भिन्न है। यह एक अन्य विषय की ओर ले जाता है, जो यशायाह के इस खंड में एक प्रमुख विषय है।

3. मूर्तिपूजा की निरर्थकता

नंबर तीन: मूर्तिपूजा की निरर्थकता. वहाँ एक विरोधाभास खींचा गया है। इस्राएली एक बुतपरस्त शक्ति, बेबीलोन की बन्धुवाई में हैं। वे बेबीलोन के मंदिर देखते हैं। वे बेबीलोन की मूर्तियाँ देखते हैं। वे धार्मिक जुलूस देखते हैं। वे अपने ही मंदिर को नष्ट होते देख रहे हैं। वे यह सोचने में प्रवृत्त हो सकते हैं कि बेबीलोन के देवता यहोवा से अधिक शक्तिशाली हैं। प्राचीन विश्व में आम अवधारणा यह थी कि जो देवता युद्ध में विजयी होता था वह अधिक शक्तिशाली देवता होता था। लेकिन मूर्तिपूजा की निरर्थकता का यह विषय आपस में जुड़ा हुआ है। क्या अय्याह इस पर प्रहार करेगा और फिर ईश्वर की शक्ति, या आराम विषय पर वापस जाएगा और वह मूर्तियों की निरर्थकता पर वापस आएगा, और विषय आपस में बदलते रहेंगे। उस तरह का आंदोलन है।

40:19 और 20 में सिर्फ एक उदाहरण देखें। “ मूर्ति के लिए कारीगर उसे ढालता है, और सुनार उसे सोने से मढ़ता है, और उसके लिए चान्दी की जंजीरें बनाता है। एक आदमी जो इतना गरीब है कि ऐसी भेंट चढ़ाने में असमर्थ है, वह ऐसी लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है। वह ऐसी मूर्ति स्थापित करने के लिए एक कुशल कारीगर की तलाश करता है जो गिरेगी नहीं।” एक कारीगर द्वारा बनाये गये पेड़ के सामने झुकना मूर्खता है! तो आप मूर्तिपूजा की व्यर्थता पर जोर देते हैं।

4. ईश्वर की सर्वज्ञता

चौथा विषय जो काफी प्रमुख है वह है ईश्वर की सर्वज्ञता। जिसने यशायाह की भविष्यवाणियाँ सुनीं या पढ़ीं, वह ईश्वर की शक्ति का प्रमाण माँग सकता था। आप कहते हैं कि ईश्वर शक्तिशाली है—हमें कैसे पता चलेगा कि वह शक्तिशाली है? सबूत की एक विशेष पंक्ति पर विशेष रूप से जोर दिया गया है, और सबूत की वह पंक्ति है: मैंने भविष्यवाणी की थी कि आप अशशूर की नहीं, बल्कि बेबीलोन की गुलामी में जायेंगे, और आप बेबीलोन की गुलामी में चले गये। मैंने भविष्यवाणी की थी कि साइरस तुम्हें बचा लेगा, और अब साइरस घटनास्थल पर है। जो लोग निर्वासन काल में रह रहे

थे, उन्होंने उन्हें मुक्ति दिलाने का वादा किया। तो आप देख सकते हैं कि भविष्य की भविष्यवाणी करने की उनकी क्षमता के संबंध में ईश्वर की सर्वज्ञता की पंक्ति पुस्तक में एक मजबूत विषय है।

5. प्रभु का सेवक

पांचवां विषय, यानी आखिरी जिसका मैं उल्लेख करूंगा, वह है: "प्रभु का सेवक।" हम उस विषय को अधिक विस्तार से देखने जा रहे हैं, इसलिए मैं अभी इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहने जा रहा हूं। परिच्छेदों की एक पूरी शृंखला है। व्हायब्रे ने कहा कि चार तथाकथित "सर्वेंट सॉन्ग" बिना किसी स्पष्ट कारण के पूरी किताब में बिखरे हुए हैं। चार से भी अधिक हैं। चार प्रमुख हैं। लेकिन नौकर के काम के कई अन्य संक्षिप्त संदर्भ पूरी किताब में बिखरे हुए हैं। तो आप केवल उन चार अनुच्छेदों को उठाकर नौकर विषय से छुटकारा नहीं पा सकते हैं। कुछ आलोचनात्मक विद्वानों का मानना है कि वे मूल रूप से किसी प्रकार की अलग रचना थी जिसे पुस्तक में सेट किया गया है। यह उससे भी अधिक जटिल है। बहुत सारे नौकर अनुच्छेद हैं, और यह एक प्रमुख विषय है।

आप यशायाह 53 में नौकर की प्रगति के चरमोत्कर्ष से परिचित हैं। यह यशायाह 53:1-12 में पाए गए नौकर पर उन प्रमुख अंशों में से चौथा है। प्रश्न उठता है: सेवक विषय निर्वासन से मुक्ति के इस व्यापक जोर के साथ कैसे एकीकृत होता है? क्या कनेक्शन है? मुझे लगता है कि जैसे-जैसे हम इस पर थोड़ा काम करते हैं, विशेष रूप से नौकर विषय के साथ, यह स्पष्ट हो जाता है कि वे दोनों कैसे संबंधित हैं। निर्वासन कोई बड़ी समस्या या बुनियादी समस्या भी नहीं है। निर्वासन बहुत सुखद नहीं हो सकता है और निश्चित रूप से एक ऐसा अनुभव है जिससे इज़राइल छुटकारा पाना चाहेगा; लेकिन निर्वासन से अधिक मौलिक पाप की समस्या थी, क्योंकि यह पाप ही था जिसके कारण निर्वासन हुआ। नौकर उस अधिक बुनियादी समस्या, पाप की समस्या से निपटने के लिए आता है, और मुझे ऐसा लगता है कि नौकर विषय निर्वासन से मुक्ति के उस संदर्भ में एकीकृत होता है।

जैसे-जैसे हम इसमें आगे बढ़ते हैं, यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है, आप देखेंगे कि कैसे मूल समस्या पाप की समस्या थी, न कि निर्वासन, भले ही निर्वासन कुछ ऐसा था जो लोगों के बीच प्रमुख था। तो आपको कम से कम वो पांच थीम तो मिल जाएंगी। आप संभवतः कुछ अन्य की पहचान कर

सकते हैं, लेकिन ये प्रमुख हैं जिन्हें यशायाह 40-66 के माध्यम से एक विनिमेय तरीके से जोड़ा गया था। यह कोई तार्किक प्रकार की संरचना नहीं है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि सिम्फोनिक, संगीत रचना के साथ यह सादृश्य यह समझने में सहायक है कि पाठ कैसे व्यवस्थित है।

शायद हमें एक ब्रेक लेना चाहिए. मैं सी. के पास जाना चाहता हूं, "अध्याय 40 का प्रस्ताव।" लेकिन अध्याय 40 में जाने से पहले, आइए दस मिनट का ब्रेक लें। जब हम वापस आएं तो हम अध्याय 40 पर शुरुआत करेंगे।

कार्ली गीमन द्वारा रफ संपादित
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित
 डॉ. पेरी फिलिप्स
 द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया